आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 02 अक्टूबर-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा का सम्मान

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर के स्वर्ण जयंती समारोह एवं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को हिन्दी में पशुचिकित्सा में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया। इस समारोह का आयोजन 14 सितम्बर को बिड़ला सभागार, जयपुर में किया गया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा और सह लेखिका प्रो. संजीता शर्मा को हिन्दी माध्यम से उच्च शिक्षा, कृषि, पशु चिकित्सा शिक्षा एवं वैज्ञानिक तकनीकी के क्षेत्र में लेखन कार्यों और पुस्तक प्रकाशन में उनके विशिष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, उच्च शिक्षा राज्य मंत्री भंवर सिंह भाटी, शिक्षा राज्य मंत्री गोविन्द सिंह टोडासरा, तकनीकी एवं संस्कृत शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग, अकादमी के निदेशक डॉ. बी.एल. सैनी सहित अन्य गणमान्य अतिथि शामिल थे। उल्लेखनीय है कि हाल ही में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को 'ई-गवर्नेन्स राजस्थान अवार्ड' से भी सम्मानित किया गया है।

कुलपति सन्देश

पशुपालन को लाभकारी बनाने के लिए समुचित प्रबंधन आवश्यक

प्रिय किसान और पशुपालक भाइयो व बहनो!

राम-राम सा।

राज्य के श्रेष्ठ नस्ल के पशुधन का वैज्ञानिक रख-रखाव व उचित प्रबंधन करने से कम लागत और मेहनत में पशुपालन को अपने अनुकूल और लाभकारी बनाया जा सकता है। पशुओं के परिपूर्ण प्रबंधन के लिए समुचित आवास व्यवस्था, पालन-पोषण, सही जनन और रोगों से बचाव के पुख्ता उपाय किए जाने आवश्यक हैं। पालतू पशुओं की संख्या, आयु तथा उत्पादन की क्षमता के आधार पर उन्नत पशु आवास की अलग-अलग व्यवस्था की जानी चाहिए। अधिक दूध उत्पादन और रोगाणुओं से बचाव के लिए आरामदायक आवास मौसम के अनुकूल हवा-रोशनी का समुचित प्रबंधन, मल-मूत्र निकासी और सुनियोजित साफ-सफाई की व्यवस्था वाला होना चाहिए। पशु आवास के लिए ऊंची-समतल जगह, सुगम यातायत और समुचित पानी-बिजली की उपलब्धता को सुनिश्चित कर लेना लाभकारी होता है। पशुधन से गुणवत्तायुक्त उत्पादन लेने के लिए पशु के भार और उसकी उत्पादन क्षमता के अनुसार चारा-दाना खिलाना चाहिए। पशु को कुल आहार का दो-तिहाई भाग मोटे चारे तथा एक तिहाई भाग दाने के मिश्रण द्वारा मिलाना चाहिए। पशु को हरा चारा खिलाने के प्रति सचेत रहना चाहिए। हरे चारे का भंडारण वैज्ञानिक तरीके से करके इसकी पौष्टिकता को बनाए रख सकते हैं। 15 से 20 प्रतिशत नमी वाले हरे चारे को पॉली- प्रोपलीन से बने साइलेज बैग्स में संरक्षण ने चारा प्रबंधन में नई क्रांति ला दी है। किसान और पशुपालक भाइयों को चारे की कमी की स्थिति में भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर उचित प्रबंधन के प्रति भी सतर्क रहना चाहिए। क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण तकनीक में हर क्षेत्र में कम मात्रा में पाए जाने वाले खनिजों को पशुओं के आहार में शामिल करके उनकी कमी से होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है और पशु उत्पादन को प्रत्यक्ष रूप से बढ़ाया जा सकता है। प्रजनन प्रबंधन का डेयरी पशुओं में विशेष महत्व है। पशुपालक को हमेशा श्रेष्ठ नस्ल के स्वस्थ पशु का ही चयन करना चाहिए। दो या तीन ब्यांत में ही पशु खरीद कर लेनी चाहिए। ऐसे पशु की पहली ब्यांत सही उम्र पर होनी चाहिए। कृत्रिम गर्भधान से नस्ल सुधार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पशुओं में होने वाले संक्रामक रोगों से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण करवाना जरूरी है। कई रोगों का उपचार संभव नहीं होता अतः टीकाकरण ही बचाव है। पशुधन हानि से बचने और उत्पादन क्षमता बनाए रखने के लिए रोगों से बचाव जरूरी है। समुचित प्रबंधन से ही पशुपालन को उपयोगी और लाभकारी बनाया जा सकता है।

जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

-महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री द्वारा राजुवास प्रदर्शनी का अवलोकन

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, मरू क्षेत्रीय परिसर, बीकानेर में 30 अगस्त, 2019 को कृषक–वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री, भारत सरकार श्री कैलाश चौधरी ने निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों को मॉडल, चार्टस, पैनल्स, रंगीन चित्रों का अवलोकन किया।

काजरी किसान मेले में राजुवास प्रदर्शनी को द्वितीय पुरस्कार

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा 16 सितम्बर को केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, परिसर जोधपुर में किसान मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन श्री कैलाश चौधरी, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री, भारत सरकार ने किया। इस मेले में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों को मॉडल, चार्टस, पैनल्स, रंगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया। राजुवास द्वारा इस प्रदर्शित प्रदर्शनी स्टॉल को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मेले में आए कृषकों पशुपालकों ने पशुपालन व पशु आहार तकनीकों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

महाराष्ट्र के 55 कृषकों ने विश्वविद्यालय के राठी गौवंश संवर्द्धन कार्यों का किया अवलोकन

वेटरनरी विश्वविद्यालय में राठी देशी गौवंश की क्षमताओं और उन्नयन कार्यों का जायजा लेने महाराष्ट्र के 55 कृषकों का एक दल 19 सितम्बर को बीकानेर पहुँचा। वेटरनरी विश्वविद्यालय में राज्य की 6 श्रेष्ठ देशी गौवंश नस्लों के संवर्द्धन और विकास कार्यों की गूंज विदेशों के साथ ही देश के कई राज्यों में पहुँच चुकी है। राजस्थान और महाराष्ट्र की समान जलवायु परिस्थितियों में राठी गौवंश का पालन करने में किसानों ने रूचि दिखाई है। नागपुर जिले के अरौली में स्वयंसेवी संगठन "विश्वास" के बैनर तले सामुदायिक तौर पर किसान के खेतों में हरा चारा उत्पादन और वितरण से क्षेत्र के किसान पशुपालन और डेयरी को अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति में बदलाव महसूस कर रहे हैं। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और वेटरनरी विश्वविद्यालय इस कार्य में कृषकों का सहयोग कर रही है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को कृषक दल के सदस्यों ने पशुपालन से आ रहे बदलाव की जानकारी दी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि कृषकों द्वारा समूह रूप में फसलों के साथ–साथ हरा चारा उत्पादन व डेयरी व्यवसाय उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनाए रखने का एक जरिया बनेगा। उन्होंने कृषकों का आह्वान किया कि वे देशी गौवंश पालन कर जैविक दुग्ध उत्पादन की ओर बढ़ेंगे तो उनकी आय में भी तेजी से बढ़ोतरी होगी और खेती पर निर्भरता कम रहेगी। वेटरनरी विश्वविद्यालय इसके लिए तकनीकी प्रशिक्षण और उन्नत पशुपालन के लिए सदैव तत्पर रहेगा। "विश्वास संस्था" के डॉ. उल्हास नीमकर, राजुवास के कुलसचिव अजीत सिंह एवं वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने भी कृषकों को सम्बोधित किया। कुलपति के विशेषाधिकारी प्रो. आर.के. धूड़िया ने सभी कृषकों का आभार जताया और विश्वविद्यालय से तकनीकी परामर्श के बारे में अवगत करवाया। कृषकों ने विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्र में राठी गौवंश के संवर्द्धन, प्रजनन और उन्नयन कार्यों का जायजा लिया। केन्द्र के प्रभारी डॉ. विजय बिश्नोई ने राठी की दुग्ध उत्पादन क्षमता और रखरखाव की जानकारी दी।

प्रशिक्षण समाचार

पशु आपदा पर राज्य के श्वान दस्तों के पुलिस कार्मिकों का प्रशिक्षण

राज्य के पुलिस श्वान दस्तों के पालक पुलिस कार्मिकों का पशु आपदा प्रबंधन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण 6 सितम्बर को से वेटरनरी विश्वविद्यालय में संपन्न हो गया। राजुवास के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र में 15 पुलिस कार्मिक इसमें भाग ले रहे हैं। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने कहा कि प्रशिक्षित श्वानों के रखरखाव और आपदा की स्थितियों में यह प्रशिक्षण उपयोगी रहेगा। राजुवास के अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के. सिंह ने कहा कि आपदा में पशुओं के बचाव उपाय मनुष्यों से भी कठिन होते हैं उन्नत तकनीकों की जानकारी होना जरूरी है। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने प्रशिक्षण के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए बताया कि केन्द्र द्वारा आपदाओं में पशुओं के बचाव व राहत कार्यों के लिए "आपदा मित्र" प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किये जायेंगें। प्रो. टी.के. गहलोत और डॉ. एस.के. झीरवाल ने भी विचार व्यक्त किए। केन्द्र के प्रशिक्षक डॉ. शैलेन्द्र सिंह शेखावत और डॉ. सोहेल मोहम्मद भी मौजूद थे।

पशुपालन से आय में वृद्धि का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीकी केन्द्र के एवं उप निदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक "आत्मा" बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में नोखा के 30 किसानों का दो दिवसीय प्रशिक्षण 17 सितम्बर को किया गया। शिविर के समापन सत्र में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता तथा संकाय अध्यक्ष प्रो. राकेश राव ने कहा कि पशुपालन क्षेत्र की आय को दुगुणा करने के लिए हमें पशुपालन तथा खेती के उत्पादों की उच्च गुणवत्ता बनाए रखने के साथ–साथ उत्पादों के मूल संवर्द्धन पर विशेष ध्यान देना होगा। बीका जी ग्रुप के वाइस प्रेसिडेंट प्रवीण गुप्ता, नेस्ले कम्पनी के डॉ. मुकेश चौधरी एवं नाबार्ड के जिला विकास मैनेजर श्री रमेश ताम्बिया ने भी सम्बोधित किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार रामनारायण खुड़िया, द्वितीय रामस्वरूप बिश्नोई तथा तृतीय पुरस्कार सूखाराम नायक ने प्राप्त किया। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. दिनेश जैन ने बताया कि पशुपालन आय में वृद्धि की उन्नत तकनीकों के बारे में पूर्व में लूणकरनसर तहसील के 30 कृषक और कोलायत, खाजूवाला के 30 कृषकों को दो दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न हुए।

वीयूटीआरसी चूरू में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 6, 7 एवं 9 सितम्बर को गांव करणसर, जनाऊ मिटठी, ढाणी मुनिमजी एवं कल्याणपुरा बिदावतान गांवों में तथा दिनांक 12 एवं 24 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 143 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 3, 6, 9, 12 एवं 16 सितम्बर को गांव गुरूसर मोडिया, खात जसवार, तेजेवाला, राजियासर एवं अनूपगढ़ गांवो में तथा दिनांक 24 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 11, 16 एवं 18 सितम्बर को गांव गुन्दवाड़ा, आंवल एवं सेलवाड़ गांवो में तथा दिनांक 20 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 105 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नूं द्वारा 16, 17, 18 एवं 19 सितम्बर को गांव पीपाकुरी, दोबरों का बास, तिलोती एवं देवरा गांवों में तथा 11 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 104 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 5, 13 एवं 18 सितम्बर को गांव बड़गांव, गोहाना एवं डांग गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 75 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 5, 7 एवं 9 सितम्बर को गांव सत्यालां फलां, बोखला बेरी फलां एवं बटका फलां गांवों में तथा 3 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 117 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 6 एवं 12 सितम्बर को गांव बारौली, महतौली एवं पॉण्ड्री गांवो में तथा दिनांक 21 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 63 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 9, 11, 12, 13 एवं 16 सितबर को गांव हाडीगांव, लाटा, होली, चान्दसैन एवं गैरोली गांवों में ताा दिनांक 7 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 138 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 2, 4, 5, 7 एवं 16 सितम्बर को गांव हंसेरा, हरियासर, जयमलसर, कोडमदेसर एवं पाण्डूसर गांवों में तथा दिनांक 13 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 159 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 11 एवं 16 सितम्बर को गांव नोताडा, खेडली काल्या एवंज जाखरूण्ड गांवों में तथा दिनांक 12, 17 एवं 23 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 139 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 6, 7 एवं 9 सितम्बर को गांव बड़बल, जावदा एवं बिछार गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 83 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 13 एवं 18 सितम्बर को गांव रूंद का पुरा, काजीपुरा एवं दंदोली गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 6, 9, 17, 18, 19 एवं 21 सितम्बर को गांव बासनी भाटियान, सन्तोराखुर्द, महादेव नगर, शिव सरणों की ढाणी, बड़ली एव केरू गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 163 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 13, 24 एवं 26 सितम्बर को गांव चूडी अजीतगढ़, बालरिया एवं तोगड़ा कलां गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 82 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 21, 25 एवं 28 सितम्बर को गांव ललाना, चारनवाशी एवं बरवाली गांवों में तथा 11 सितम्बर को कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 किसानों ने भाग लिया।

अक्टूबर माह में पशु प्रबंधन कैसे करें

राज्य में इस वर्ष कुछ जिलों को छोड़कर लगभग सभी जिलों में बरसात खत्म हो गई है और मौसम में बदलाव शुरू हो गया है विशेषकर प्रातःकाल सर्दी का अहसास होने लगा है। ऐसे मौसम में पशुपालकों को चाहिये कि वे अपने पशुओं की देखभाल अच्छी तरह करें।

इस माह विषाणुजनित रोग जैसे गौवंश व भैंसों में तीन दिन का बुखार, गौवंश, भैंस, ऊंट व भेड़–बकरियों में माता रोग, भेड़–बकरियों में पी.पी.आर और सभी पशुओं में खुरपका–मुंहपका मुख्य रूप से प्रभावित करते हैं। ये रोग ग्याभन, वृद्ध, बहुत छोटे व कमजोर पशुओं को ज्यादा प्रभावित करते हैं। अतः ऐसे पशुओं की विशेष देखभाल की जानी चाहिए। विषाणुजनित रोग पशु को अचानक प्रभावित करते है, तेज बुखार आता है, चारा खाना रुक जाता है, उत्पादन एकदम से निम्न स्तर पर पहुंच जाता है और ये रोग बहुत ही तेजी से अन्य स्वस्थ्य पशुओं में फैल सकता है। इन सामान्य लक्षणों के अतिरिक्त हर विषाणुजनित रोग के विशेष लक्षण होते है। तीन दिन के बुखार रोग से प्रभावित पशु को तेज बुखार आता है, खाना पीना बंद कर देता है, आंखों से पानी गिरता है और पशु एक टांग से लंकड़ा कर चलता है। मातारोग में पूरे शरीर पर छोटी–छोटी फुंसिया बन जाती है जो कई अवस्थाओं से गुजर कर अंत में घाव में बदल जाती है जिसमें मक्खियों के लार्वा विकसित हो जाते है, जिससे पशु को काफी परेशानी होती है और पशु की कार्य क्षमता बुरी तरह प्रभावित होती है। इसी प्रकार खुरपका–मुंहपका रोग में मुंह एवं खुर्रो के बीच घाव हो जाते हैं और छोटे बछड़े–बछड़ियां मौत का शिकार हो जाती है। भेड़–बकरियों में पी. पी.आर. रोग से मुंह में छाले, आंख नाक से पानी गिरना, दस्त, गर्भपात इत्यादि मुख्य लक्षण है। माता, पी.पी.आर. और खुरपका–मुंहपका रोगों से बचाव के लिए टीके उपलब्ध हैं।

अतः पशुपालकों को चाहिए कि स्थानीय पशु चिकित्सक से संपर्क कर उचित समय पर पशुओं को टीके लगवाएं और अपने पशुधन की रक्षा करें। रोग के फैलाव को रोकने के लिए बीमार पशु को स्वस्थ्य पशुओं से अलग रखे तथा ईलाज के लिए तुरंत पशुचिकित्सक से संपर्क करें। बदलते मौसम में न्यूमोनिया से भी पशु प्रभावित हो सकते हैं। इस रोग से बचाव के लिए पशुओं को रात के समय छाया अथवा छप्पर के नीचे बांधें और बीमार होने की स्थिति में शीघ्र पशु चिकित्सक से मिल कर इलाज करावें।

इस महीने दशहरा और दीपावली का उत्सव भी है और इन दिनों आतिशबाजी का माहौल रहता है। पटाखों के शोर में पशुओं में डर और तनाव की स्थिति बनी रहती है, जिससे पशु परेशान रहते हैं और उत्पादन में कमी आती है। इसके साथ ही घासफूस के छप्पर में आग लगने से पशुओं के जलने की दुर्घटना भी काफी देखने को मिलती है। अतः पशुपालकों को इस समय छप्पर को चिंगारी या आग से बचाने के लिए विशेष ध्यान रखना चाहिए।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुपालन क्षेत्र में चुनौतियां और सुझाव

विश्व का लगभग 2.29 प्रतिशत भूमि क्षेत्र हमारे देश में है जबकि विश्व की कुल पशुपालन की आबादी का 11.6 प्रतिशत यहाँ पर है। भारत विश्व में सबसे ज्यादा दुग्ध उत्पादन वाला देश है। पशुधन से प्राप्त दूध का वर्तमान में मूल्य लगभग 6.5 लाख करोड़ प्रति वर्ष है जो चावल और गेहूं के कुल मूल्य से भी अधिक है। अंडे और मांस उत्पादन में भारत विश्व में क्रमशः तीसरे और पांचवें स्थान पर है। इसी को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने सन 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने का लक्ष्य रखा है परन्तु भविष्य में किसी भी निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान वर्तमान पशुधन क्षेत्र में कई चुनौतियाँ सामने आएंगी जिनसे पार जाने पर ही पशुधन से अधिकतम आय प्राप्त की जा सकेगी। कुछ विशिष्ट चुनौतियां और निवारण इस प्रकार हैं:

पशु रोगों का नियंत्रण: विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन ने पशुओं की 117 बीमारियों को सूचीबद्ध किया है, जिनमें से लगभग 80 प्रतिशत भारत में मौजूद हैं। खुरपका–मुहँपका, गलघोंटू, पीपीआर, ब्रुसेलोसिस, एंथ्रेक्स, रैबीज, आदि जैसे कुछ प्रमुख रोग हैं जिनसे पशुधन को हर साल नुकसान उठाना पड़ता है। खुरपका– मुहँपका के कारण भारत में सबसे अधिक आर्थिक नुकसान होता है।

सुझाव: टीकाकरण द्वारा बीमारियों को रोका जा सकता है। रोग विशेष के प्रति अति संवेदनशील प्रजातियों को लक्षित करके टीकाकरण कार्यक्रम किया जाना चाहिए। भारत में पशु चिकित्सा सेवाओं के लिए मानव संसाधन तथा बुनियादी ढांचा अपर्याप्त है, इसलिए दूरदराज के क्षेत्रों में मोबाइल पशु चिकित्सा सेवा द्वारा पशुपालक को उसके द्वार पर प्राथमिक चिकित्सा, कृत्रिम गर्भाधान, डीवर्मिंग और टीकाकरण की सुविधा प्रदान की जा सकती हैं। पशु चिकित्सालयों की संख्या जनसंख्या के हिसाब से नहीं होकर क्षेत्रों के अनुसार होनी चाहिए। जैसे–जैसे सघन पशुपालन बढ़ रहा है, यह मानव आबादी के लिए जूनोटिक रोगों का खतरा पैदा कर रहा है, इसलिए राज्य के स्वास्थ्य विभागों में जनस्वास्थ्य पशुचिकित्सक के रूप में पशु चिकित्सकों के शामिल करने की आवश्यकता है।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध: यह दुनिया के सभी देशों के लिए एक नई चुनौती है। पशुओं के संक्रामक रोगों से लड़ने के लिए पशुपालन क्षेत्र के खाद्य पशुओं (बकरे, भेड़, मुर्गियां आदि) में वृद्धि प्रमोटर के रूप में एंटीबायोटिक दवाओं का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है साथ ही पशुओं में थनैला रोग के मामले में एंटीबॉयोटिक दवाओं का सबसे अधिक उपयोग होता है।

सुझाव: सबसे पहले, एंटीबॉयोटिक दवाओं की विनियमित बिक्री होनी चाहिए। एंटीबॉयोटिक्स को केवल तभी बेचा जाना चाहिए जब वे एक पंजीकृत पशु चिकित्सक द्वारा निर्धारित की गयी हों। लोगों के बीच रोगाणुरोधी प्रतिरोध के बारे में जागरूकता फैलानी चाहिए। एंटीबॉयोटिक का अँधाधुंध उपयोग मानव जीवन के लिए घातक साबित हो सकता है।

ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन: भारतीय पशुधन का कुल वैश्विक मीथेन उत्सर्जन में 15.1 प्रतिशत का योगदान है। हमारे देश में कुल मीथेन का लगभग आधा उत्सर्जन गायों द्वारा होता है। मीथेन एक ग्रीन हाउस गैस है और इन ग्रीन हाउस गैसों से पृथ्वी का सतही तापमान बढ़ता है।

सुझाव: उपयुक्त चारे का उपयोग और पशुधन उत्पादकता में सुधार कर मीथेन उत्सर्जन में कमी की जा सकती है। पशुओं के लिए फीड सप्लीमेंट्स का उपयोग कर, कम गुणवत्ता वाले चारे का उपचार द्वारा पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ा कर, पशुओं के अपशिष्ट की खाद बनाकर, बॉयो गैस प्लांट स्थापित कर के मीथेन उत्सर्जन को कम किया जा सकता है।

नस्ल सुधार: भारत में नस्ल सुधार की तत्काल आवश्यकता है। हमारे यहां गाय और भैंस का प्रति पशु उत्पादन विश्व औसत का आधा है लेकिन योग्य बैल की अनुपलब्धता और वैज्ञानिक प्रजनन प्रक्रियाओं के बारे में किसानों में जागरूकता की कमी के कारण वांछित नस्ल सुधार अब तक नहीं हो पाया है।

सुझाव: वैज्ञानिक प्रजनन प्रक्रियाओं के बारे में किसानों को जागरूक किया जाना चाहिए। पशुपालक के द्वार पर कृत्रिम गर्भाधान व गर्भाधान परीक्षण उपलब्ध करवाने चाहिए। कृत्रिम गर्भाधान के लिए संतान परीक्षण वीर्य का उपयोग किया जाना चाहिए। सरकार को गैर–वर्गीकृत पशुओं के लिए शुद्ध देसी नस्ल के बजाय क्रॉस प्रजनन और ग्रेडिंग पर ध्यान देना चाहिए।

दूध की कीमत: हमारे देश में पशुपालकों को दूध का उचित मूल्य नहीं मिलना भी एक बड़ी चुनौती है। प्रति लीटर दूध की उत्पादन लागत की तुलना में लाभ बहुत कम है।

सुझाव: दूध का तर्कसंगत मूल्य निर्धारण करना ताकि किसानों को दुग्ध उत्पादन की लागत से ज्यादा कीमत मिल सके। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड की सहायता से सहकारी समितियों का पुनरुद्धार करना चाहिए। पशुधन उत्पादों के लिए एक बेहतर आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और विपणन सुविधा उपलब्ध करवाना चाहिए।

असंगठित बाजार: पशुधन उत्पादों के बाजार अविकसित और कमजोर आपूर्ति श्रृंखला युक्त हैं। संगठित बाजार की हिस्सेदारी बहुत कम है। उत्पादों के संरक्षण और परिवहन के लिए उचित बुनियादी ढाँचा नहीं होने के कारण उत्पाद की गुणवत्ता में कमी आती है और परिवहन पर उच्च लागत के कारण किसानों को नुकसान होता है।

सुझाव: संगठित बाजार के लिए सहकारी समितियों, थोक दूध शीतलन केंद्र, दूध संग्रह केंद्र, परिवहन सुविधा आदि को मजबूत करना चाहिए। कच्चे माल को लंबी दूरी पर बेचने के बजाय इनसे मूल्य वृद्धि उत्पादों का निर्माण एवं विविधीकरण की योजनाएं बनाने की अत्यधिक आवश्यकता है।

पशुधन प्रसार सेवाएं: विशेष पशुधन प्रसार कार्यक्रम होने चाहिए जो पशुपालक को सरल एवं सुलभ सूचनाएं उपलब्ध करवा सके। सेवाएं स्वास्थ्य केंद्रित हैं जबकि प्रसार केंद्रित होनी चाहिए।

सुझाव: आवश्यकता आधारित प्रसार सेवाओ की तरफ कदम उठाना चाहिए। पशुपालन विशेषज्ञ के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र, वाटर शैड आदि को मजबूत करना चाहिए। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी उपकरणों के माध्यम से पशुपालको तक सूचना का प्रसार करना आवश्यक है। कृषि नवाचार प्रणाली की तर्ज पर पशुधन नवाचार प्रणाली को लाना चाहिए। पशुधन प्रसार अधिकारियों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाना चाहिए जिससे प्रमाणित पशुधन सलाहकार के रूप में उनका उपयोग किया जा सके।

चारे की कमी: दैनिक पशुधन उत्पादन में सभी तरह के नुकसान का लगभग आधा नुकसान चारे की कमी से होता है। भारत में पशुधन मुख्य रूप से फसल के अवशेषों पर निर्भर करता हैं क्योंकि यह उनके भोजन का मुख्य स्रोत है जो कि गुणवत्ता में काफी कमजोर होता है।

सुझाव: कम उत्पादन वाले पशुओं का उच्च उत्पादन वाले पशुओं द्वारा प्रतिस्थापन, संतुलित भोजन, बचे खाद्य पदार्थो का उपयोग, फसल अवशेषों का उपयोग, चारा उगाने के लिए अनुत्पादक भूमि का उपयोग, अजोला की खेती, हे व साइलेज बनाकर और चारागह संरक्षण द्वारा चारे की कमी को दूर किया जा सकता है।

डॉ. मैना कुमारी, सहायक प्राध्यापिका,
अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर,
डॉ. कमलेश धवल (पशु चिकित्सा अधिकारी, बीकानेर)

पशुओं में ब्रूसेलोसिस की समस्या और प्रबंधन

ब्रूसेलोसिस को बैंग की बीमारी, माल्टा बुखार, मेडिटरेनियन ज्वर क्रीमिया बुखार, रॉक बुखार, या माल्टा ज्वर भी कहते हैं। यह एक जीवाणुजनित बीमारी है और यह आमतौर पर जानवरों और मनुष्यों दोनों को संक्रमित करता हैं। यह गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सूअर एवं श्वानों में फैलने वाली बीमारी है। पशुओं का दूध पीने, मांस खाने या इनके स्रावों के सम्पर्क में आने से मनुष्यों में भी इसका संक्रमण हो सकता है।

कारण

गाय, भैंस में यह रोग ब्रूसेला एबोरटस नामक जीवाणु के कारण होता है, यह जीवाणु गाभिन पशु की बच्चेदानी में रहता है तथा 7–9 महीने के गर्भकाल में पशुओं का गर्भपात करा देता है।

संक्रमण का मार्ग

- संक्रमित पशुओं का कच्चा दूध पीने से,
- संक्रमित पशुओं का मांस खाने से,
- पशु ऊतक या जानवरों के साथ काम करते समय,
- संक्रमित पशुओं के जननांगों के स्राव के सम्पर्क में आने से और
- योनि स्राव से संक्रमित चारे के प्रयोग से

ब्रूसेलोसिस के लक्षण

इस रोग में मादा पशुओं में गर्भपात से पहले योनि से अपारदर्शी पदार्थ निकलना तथा गर्भपात के बाद जेर का रुकना एवं नर पशुओं के अंडकोष में सूजन मुख्य लक्षण है। इस रोग में गाय व भैंसों में गर्भावस्था के अन्तिम तिमाही (7–9 महीने) में गर्भपात हो जाता है। पशुओं के पैरों के जोड़ों पर सूजन आ जाती है जिसे हाइग्रोमा कहते है इससे पशुओं के बैठने उठने में परेशानी होती है। संक्रमित व्यक्ति में इस रोग के कारण उतार–चढ़ाव वाला तेज बुखार आता है तथा यह जोड़ों में आर्थ्रायटिस (जोड़ों की सूजन) एवं कमर दर्द भी पैदा कर सकता है। इस रोग में संक्रमित व्यक्ति को भूख नहीं लगना, सुस्ती, चक्कर, सर दर्द और तेजी से वजन घटना आदि प्रमुख लक्षण है।

ब्रूसेलोसिस का निदान

- इस रोग द्वारा मृत्यु की संख्या अधिक नहीं है, किंतु रोग शीघ्र दूर नहीं होता।
- दूध रिंग टेस्ट यह टेस्ट समूह में ब्रूसेलोसिस के निदान के लिए उपयोग किया जाता है। इस परीक्षण में, ब्रूसेला के खिलाफ एंटीबॉडी का पता लगाया गया है। 1 मि.ली. दूध का एक बूंद (30 माइक्रो लीटर) एंटीजन के साथ मिलाया जाता है और एक घंटें के लिए 37^{0} सेल्सियस पर रखा जाता है। सकारात्मक मामलों में एक नीली रिंग (छल्ला) सफेद दूध के कॉलम के ऊपर होती है। नकारात्मक मामलों में कोई रिंग नहीं बनती है।
- ब्रूसेलोसिस का निदान कराने के लिए रोगी पशु के रक्त, दूध तथा योनि स्राव की जांच आदि मुख्य परीक्षण हैं।
- संक्रमित पशु के गर्भपात के बाद चमड़े जैसी जेर की मौजूदगी।
- टेस्ट और हटाने या संक्रमित पशुओं के अलगाव की नीति।
- संक्रमित मनुष्य के वीर्य की जांच।

प्रबंधन

- अब तक इस रोग का कोई प्रभावकारी इलाज नहीं हैं इसलिए बेहतर प्रबंधन अपनाकर ही इस रोग से बचा जा सकता है।
- ब्रूसेला एस–19 लाइव टीके के साथ टीकाकरण किया जाता है, यह एक कम उम्र में लगाया जाने वाला वैक्सीन टीका हैं। इस वैक्सीन के 2 मिलीलीटर (ब्रूवेक्स, इंडियन इम्युनोलॉजिकल) को मादा पशु में 4–8 महीने की उम्र में लगाया जाता है। नर और गर्भवती पशुओं को टीका नहीं लगाया जाता है।
- पशु ऊतकों या पशुओं को संभालने के दौरान सुरक्षात्मक चश्मा और दस्ताने पहनें।
- गर्भपात होने की दशा में मृत नवजात एवं जेर को चूने के साथ मिलाकर गहरे खड्डे के अंदर दबा देना चाहिए जिससे जंगली पशु पक्षी इसे फैला न सके।
- पशुओं को अपने बच्चों को जन्म देने में मदद करते समय संबंधित व्यक्ति को सुरक्षात्मक दस्ताने या कपड़ों का प्रयोग करना चाहिए।
- जिस जगह पशु का गर्भपात हुआ हो उस जगह को फिनाइल द्वारा अच्छे से विसंक्रमित करना चाहिए।
- रोगी मादा पशु के कच्चे दूध, आइसक्रीम, पनीर और कच्चे मांस के सेवन से बचना चाहिए तथा स्वस्थ नवजात बच्चों को भी रोगी मादा का दूध नहीं पिलाना चाहिए।
- नये खरीदे गए पशुओं को ब्रूसेला संक्रमण की जांच किये बिना स्वस्थ पशुओं के साथ नहीं मिलाना चाहिए।
- रोगग्रस्त पशु रक्त के साथ सीधे संपर्क में आने की दशा में किसी भी खुले घाव को कवर करने का प्रयास करें।
- ब्रूसेलोसिस का टीका कभी भी गर्भित पशुओं में नहीं लगवाना चाहिए।
- अच्छे से छानकर एवं पूरी तरह उबालकर ही रोगग्रस्त पशु के दूध का सेवन करना चाहिए।

–डॉ. मनोहर सैन, डॉ. रजनी जोशी
एवं डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
राजुवास, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अक्टूबर, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, झुंझुनू, धौलपुर, सवाई–माधोपुर, अलवर, जयपुर, बांसवाड़ा, अजमेर, बीकानेर, चूरू
पी.पी.आर. (PPR)	बकरी, भेड़	हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर, सवाई–माधोपुर, सिरोही, पाली, जयपुर, श्रीगंगानगर, जोधपुर
चेचक (Pox)	बकरी, भेड़	जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, अलवर, नागौर
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा, टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, अलवर, धौलपुर, झुंझुनू, हनुमानगढ़, भरतपुर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस (Pneumonic Pasteurelosis)	गाय, भैंस,	सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, बांसवाड़ा, भरतपुर
ठप्पा रोग (Black Quarter)	भैंस, गाय	जैसलमेर, जयपुर, बीकानेर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़
फड़किया (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, धौलपुर, भीलवाड़ा, अलवर, भरतपुर
Enzootic Abortion in Ewes/ Chalmydial Abortion	भेड़	बीकानेर, नागौर
सर्रा (तिबरसा) (Trypanosomiasis)	ऊंट, भैंस	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, झालावाड, पाली
रक्त प्रोटोजोआ थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस (Theileriosis and Babesiosis)	भैंस, गाय	बांसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, जयपुर, पाली, चूरू, अलवर
अन्तः परजीवी (पर्ण–कृमि, गोल–कृमि, फीता–कृमि)	बकरी, भेड़, ऊंट, भैंस, गाय	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, सीकर, बीकानेर, उदयपुर, चूरू,
खुजली (Mange)	ऊंट, बकरी	बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, पाली, झुंझुनू, जोधपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

नारूलाल ने पशुपालन को बनाया रोजगार का जरिया

चित्तौड़गढ़ तहसील के बोजुन्दा गांव के नारूलाल गुर्जर ने कृषि एवं पशुपालन के उचित सामंजस्य से आजीविका प्राप्त कर अपने परिवार का उचित पालन पोषण द्वारा समृद्ध जीवन सुनिश्चित कर अपनी सूझबूझ का परिचय दिया है। घर की खराब आर्थिक स्थिति के कारण नारूलाल ने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोडकर खेती और पशुपालन को रोजगार के लिए चुना जिसमें शुरूआत के दिनों में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। नारूलाल ने अपनी 7 बीघा जमीन, 2 गाय व 3 भैंसों से अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया। जानकारी के अभाव में कई बार आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा फिर भी अपनी मेहनत और लगन से पशुपालन पर ध्यान केन्द्रित रखा। उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में भाग लिया और पशुपालन विशेषज्ञों के सम्पर्क में रहें। वर्तमान में इनके पास 7 भैंसें, 4 पाडियां, 6 गाय, 3 बछड़िया व एक घोड़ी है भैंसों व गायों का दूध बेचकर आय अर्जित करते है। गोबर का उपयोग अपनी खेती में करके रासायनिक खाद् की मात्रा व लागत को कम करने में सफलता पाई हैं। नारूलाल गाय का दूध लगभग 35 रू. प्रति लीटर व भैंस का दूध 60 रू. प्रति लीटर के हिसाब से विक्रय कर रहे हैं। वे प्रतिमाह 60,000 से 70,000 / रू. का दूध विक्रय कर रहे है जिससे घर की आर्थिक स्थिति को मजबूत बना लिया। वैज्ञानिक तौर–तरीकों से पशुपालन करने के लिए समय–समय पर पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा के विशेषज्ञों से सलाह लेते है तथा प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवणों की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन व दुधारू पशुओं की देखभाल, सन्तुलित पशु आहार, अजोला आदि की जानकारी प्राप्त करते हैं। नारूलाल ने नयी तकनीकों को उपयोग में लेकर आसपास के गांवों में एक सफल पशुपालक के रूप में अपनी पहचान बनाई है। **(सम्पर्क नारूलाल गुर्जर मो. 7742187474)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

बतख–मछली सहपालन आय अर्जित करने का सरल उपाय

प्रिय, किसान और पशुपालक भाइयों और बहनों !

इस बार अच्छी मानसूनी बरसात के कारण पोखर व तालाबों में पानी की अच्छी आवक हुई है। किसान और पशुपालक भाई बतख–मछली सहपालन करके अपनी आय का स्त्रोत बढ़ा सकते है। बतख और मछली सहपालन एक ही समय पर एक ही स्थान पर सरलता से किया जा सकता है। इसमें बतख के मांस, अंडे और मछली का उत्पादन लिया जा सकता है। बतख अपने भोजन का 50–75 प्रतिशत भाग जलीय खरपतवार, कीड़े मकोडे, मौलस्क इत्यादि के रूप में तालाब से ही ले सकती है और मछलियां बतख द्वारा बिखेरे गए भोजन को काम में ले सकती है कुछ मछलियां सीधा ही बतखों की बीट को भी खा सकती है। बतखें जलीय पादपों के फैलने पर भी नियंत्रण रखती है। बतख तालाब के पेंदे के कीचड़ में चोंच मारकर पोषक तत्वों को तालाब के पानी में निकालती रहती है और तालाब की उत्पादकता बढ़ाती है। बतख की बीट एक अच्छे उर्वरक का काम करती है जो कि मछलियों के भोजन जैसे कि फाइटोप्लेक्टोन और जूप्लेकंटोन के उत्पादन में सहायक होती है। इससे मछली पालन के लिए आवश्यक अतिरिक्त उर्वरक मिलाने की आवश्यकता नहीं होती जिससे उर्वरक मिलाने के लिए होने वाले खर्च और परिश्रम को भी कम किया जा सकता है। बतख सह मछली पालन के लिए स्थान का चुनाव करते समय सस्ती जमीन और प्रचुर मात्रा में स्वच्छ पानी की उपलब्धता होनी चाहिए। अच्छी किस्म की मछलियां और मिट्टी और वातावरण अनुकूल होने चाहिए। तालाब का निर्धारण स्थान की उपलब्धता से पेंदे का ढाल एक तरफ या केन्द्र में रखा जाना चाहिए जिससे आवश्यक होने पर उसे खाली किया जा सके। वैज्ञानिक विधि से तैयार मछली फार्म में तीन तरह के तालाब होते है : 1. नर्सरी तालाब – इसका विस्तार 100 से 500 वर्ग मीटर तथा गहराई 1–1.5 मीटर तक हो सकती है। 2. पालन–पोषण तालाब – इसका विस्तार 500 से 1000 वर्ग मीटर तथा गहराई 1.5–2.00 मीटर हो सकती है। 3. संग्रहण तालाब – इसका विस्तार 1000 से 2000 वर्ग मी. तथा गहराई 2.0–2.5 मीटर होता है। समय–समय पर तालाब के पानी को बदलना चाहिए और पानी की लवणता (7.5–8.0) को चूना मिलाकर सही किया जा सकता है। मछलियों के स्वास्थ की निगरानी रखनी चाहिए। 7–8 माह की मछलियां बाजार में विक्रय की जा सकती है। सहपालन में बतख ज्यादा समय तालाब में रहती है अतः विशेष आवास की आवश्यकता नहीं रहती। इसके लिए रात्रि विश्राम के लिए बांस, लकड़ी इत्यादि की सहायता से बतखों के लिए आश्रय बनाया जा सकता है। बतख मछली सहपालन में तालाब से एक बीघा जलीय क्षेत्रफल से एक वर्ष में 450–500 किलाग्राम मछली, 3000–3300 अण्डे और 30–33 किलोग्राम बतख मांस का उत्पादन किया जा सकता है। इस बारे में पशु विविधिकरण सजीव मॉडल, वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर से संपर्क या मिलकर विस्तृत जानकारी ली जा सकती है। **-प्रो.(डॉ.)अकबर अली गौरी, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414431098**

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अक्टूबर 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
प्रो. जी.एन. पुरोहित **9414325045** विभागाध्यक्ष, पशुरोग एवं प्रसूति विभाग सी.वी.ए.एस., बीकानेर	दुधारू पशुओं में फोराव की समस्या, कारण एवं निवारण	03.10.2019
प्रो. आर.के. धूड़िया 9414283388 विशेषाधिकारी, माननीय कुलपति, राजुवास, बीकानेर	पशुपालन के क्षेत्र में प्रसार शिक्षा की उपयोगिता	17.10.2019

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
संपादक
डॉ. आर. के. धूड़िया
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
डॉ. ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224